एम. ए. राजस्थानी

सेमेस्टर–प्रथम

अनिवार्य पत्र (MAJOR COURSE)

RAJ 101 : राजस्थानी भाषा और साहित्य का इतिहास

पाठ्यक्रम उद्देश्य, उपादेयता एवं अध्ययन क्षेत्र

उद्देश्य एवं उपादेयता

उद्देश्य

भारतीय भाषा एवं साहित्य परंपरा में राजस्थानी भाषा एवं साहित्य के इतिहास का बहुत महत्त्वपूर्ण स्थान है। राजस्थानी साहित्य की परंपरा बहुत समृद्ध रही है। आदिकाल से लेकर आर्वाचीन काल तक की साहित्यिक परंपरा को समझने और साहित्यकारों की सृजन साधना के विभिन्न आयामों को जानने की दृष्टि से इस पाठ्यक्रम का संयोजन किया गया है।

राजस्थानी भाषा की विकास परंपरा जो वैदिक परंपरा से प्रारंभ होकर प्राकृत, पालि, अपभ्रंश और आधुनिक राजस्थानी भाषा के मानक स्वरूप तक गतिमान रही है, उसका अध्ययन भी किया जाएगा। प्रायः यह धारणा रहती है बोलियां, भाषाएं को कमजोर करती है लेकिन यह धारणा भ्रांत है बोलियां ही भाषा को समृद्ध करती है। राजस्थानी बोलियों के संबंध में भी यही तथ्य उल्लेखनीय है। इस दृष्टि से उन बोलियों की विकास परंपरा और विशिष्टताओं का परिचय प्राप्त करने का उद्देश्य है।

उपयोगिता

इस प्रश्न पत्र से राजस्थानी भाषा और साहित्य का अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों के समक्ष भाषा और साहित्य की विकास परंपरा की एक रूपरेखा प्रस्तुत हो जाएगी जिसमें उनके द्वारा किये जाने वाले अध्ययन को एक सुदृढ़ आधार प्राप्त होगा। इस दृष्टि से यह अध्ययन बहुत उपयोगी सिद्ध होगा।

अध्ययन क्षेत्र

1. राजस्थानी भाषा का उद्भव एवं विकास परम्परा का विस्तृत अध्ययन–वैदिक संस्कृत, लौकिक संस्कृत, पालि, प्राकृत, अपभ्रंश एवं आधुनिक राजस्थानी भाषा
2. राजस्थानी भाषा की विभिन्न बोलियां, उपबोलियां एवं उनका क्षेत्र
3. राजस्थानी भाषा की व्याकरणिक विशेषताएं
4. राजस्थानी साहित्य की विकास परम्परा विभिन्न कालक्रम के अनुसार

5. राजस्थानी साहित्य के प्राचीन काल, मध्यकाल : परिस्थितियों, प्रवृत्तियां विभिन्न रचनाएं एवं रचनाकार

प्रथम इकाई – राजस्थानी भाषा की विकास परंपरा–वैदिक संस्कृत से आधुनिक राजस्थानी भाषा। मानक भाषा के रूप में मान्यता।

द्वितीय इकाई – राजस्थानी भाषा एवं उसकी विभिन्न बोलियां एवं लिपि।

तृतीय इकाई – राजस्थानी भाषा की व्याकरणिक विशेषताएं।

चतुर्थ इकाई–प्राचीन एवं मध्यकालीन राजस्थानी साहित्य की विकास परम्परा–प्रवृत्तियां, रचनाएं एवं रचनाकार

पंचम इकाई – आधुनिक राजस्थानी गद्य एवं पद्य की विकास परंपरा प्रवृत्तियां, रचनाएं एवं रचनाकार।

अभिप्रस्तावित ग्रंथ

1. राजस्थानी भाषा और साहित्य : डॉ. मोतीलाल मेनारिया राजस्थानी ग्रंथागार, जोधपुर
2. राजस्थानी भाषा और साहित्य : डॉ. हीरालाल माहेश्वरी, आधुनिक पुस्तक भवन, कलकत्ता
3. History of Rajasthani Literature ; Dr. Hiralal Maheswari, Sahitya Akadami, New Delhi
4. राजस्थानी भाषा एवं परिचय : डॉ. नरोत्तम स्वामी : नवयुग ग्रंथ कुटीर, बीकानेर
5. राजस्थानी भाषा और व्याकरण : सीताराम लालस, राजस्थानी ग्रंथागार, जोधपुर
6. राजस्थानी भाषा : डॉ. सुनीति कुमार चाटुर्ज्या : साहित्य संस्थान, उदयपुर
7. आधुनिक राजस्थानी प्रेरणा स्रोत, एवं प्रवृत्तियां :डॉ. किरण नाहटा, चिन्मय प्रकाशन, जयपुर

एम. ए. राजस्थानी

सेमेस्टर–प्रथम

अनिवार्य पत्र (MAJOR COURSE)

RAJ 102 : आधुनिक राजस्थानी गद्य

पाठ्यक्रम उद्देश्य, उपादेयता एवं अध्ययन क्षेत्र

उद्देश्य एवं उपादेयता

उद्देश्य

राजस्थानी गद्य साहित्य का प्रारंभ वात साहित्य से माना जाता है। इसके अतिरिक्त ख्यात–विगत आदि को भी गद्य साहित्य की प्रारंभिक विधाएं कहा जा सकता है। वात साहित्य की दृष्टि से राजस्थानी साहित्य बहुत समृद्ध और विशाल रहा है और उसके नानाविध विषय भी रहे हैं।

आधुनिक राजस्थानी कथा की परंपरा लगभग सौ से सवासौ वर्ष पूर्व प्रारंभ हुई थी जिसका विकसित रूप आज हमें दिखाई दे रहा है। राजस्थानी कथा साहित्य के अध्ययन में कथा और उपन्यास साहित्य को ही सम्मिलित किया है। कथा साहित्य की परंपरा का अध्ययन करना ही इस प्रश्न पत्र का उद्देश्य है।

उपयोगिता

किसी भी साहित्य की गद्य परंपरा में कथा साहित्य को सबसे महत्त्वपूर्ण और आधारभूत माना जाता है। गद्य साहित्य का विकास भी कथा से ही प्रारंभ माना गया है।

राजस्थानी गद्य परंपरा का उद्भव मध्यकाल से हो गया था लेकिन कथा साहित्य का प्रारंभ बीसवीं शताब्दी से हो गया था। तब से लेकर अब तक की राजस्थानी कथा साहितय की यात्रा का अध्ययन करना तथा प्रमुख उपन्यासकारों एवं कथाकारों का परिचय प्राप्त कर उनके द्वारा सृजित साहित्य का अध्ययन प्रत्येक विद्यार्थी के अध्ययन के लिए आवश्यक है। इसके अतिरिक्त अन्य गद्य विधाओं का अध्ययन भी किया जाएगा। इस दृष्टि से यह पाठ्यक्रम उनके लिए अत्यंत उपयोगी सिद्ध होगा।

अध्ययन क्षेत्र

1. आधुनिक राजस्थानी गद्य की विकास परंपरा
2. आधुनिक राजस्थानी उपन्यास एवं कहानी : विकास परंपरा प्रमुख रचनाएं एवं रचनाकार
3. आधुनिक राजस्थानी गद्य : विकास के आयाम

4. आधुनिक राजस्थानी निबंध परंपरा

प्रथम इकाई – आधुनिक गद्य विकास परंपरा का परिचय

द्वितीय इकाई – राजस्थानी निबंध संग्रह, सं. चन्द्रसिंह

तृतीय इकाई – 'मैंवे रा रुंख' उपन्यास : अन्नाराम सुदामा

चतुर्थ इकाई – आज री राजस्थानी कहाणियां : सं. रावत सारस्वत

पंचम इकाई – पाठ्यपुस्तकों में से सप्रसंग व्याख्या

पाठ्यपुस्तकें

1. मैंवे रा रुख (उपन्यास) : आत्माराम सुदामा, प्रकाशक : धरती प्रकाशन, गंगाशहर बीकानेर
2. आज री राजस्थानी कहाणियां : सं. रावत सारस्वत, प्रकाशक : साहित्य अकादमी : नयी दिल्ली (निर्धारित कहाणियां : मास्टर जी, भारत भाग्य विधाता, करड़ी आंच, बरसगांठ, संजीवण, अलेखूं हिटलर, सुकड़ीजता आंगणा)
3. राजस्थानी निबंध संग्रह : चन्द्रसिंह, राजस्थानी ग्रंथागार, जोधपुर

अभिप्रस्तावित ग्रंथ

1. आधुनिक राजस्थानी साहित्य प्रेरणा स्रोत एवं प्रवृत्तियां : डॉ. किरण नाहटा, चिन्मय प्रकाशन : जयपुर
2. बखत री बारखडी : डॉ. अर्जुनदेव चारण
3. आधुनिक राजस्थानी गद्य का विकास : डॉ रामस्वरूप व्यास, प्रवीण प्रकाशन जोधपुर।

एम. ए. राजस्थानी

प्रथम सेमेस्टर

अनिवार्य पत्र (MAJOR COURSE)

RAJ 103 : आधुनिक राजस्थानी पद्य

पाठ्यक्रम उद्देश्य, उपादेयता एवं अध्ययन क्षेत्र

उद्देश्य एवं उपादेयता

उद्देश्य

राजस्थानी साहित्य की काव्य परंपरा विशिष्ट और समृद्ध रही है। वीरता, भक्ति रीति, नीति, श्रृंगार एवं आधुनिक युग की समस्त काव्य प्रवृत्तियों और काव्यधाराओं को आधार बनाकर रचनाकारों ने अपनी रचनाओं का प्रस्तुत किया है।

आधुनिक राजस्थानी काव्य परंपरा का प्रारंभ उन्नीसवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध से माना जा सकता है। क्योंकि काव्य धारा में परिवर्तन के स्वर सुनायी देने लग गये थे। इसके पश्चात् प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के साथ साथ सम्पूर्ण भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में राजस्थानी कवियों ने अपनी महती भूमिका निभायी थी, स्वातंत्र्योत्तर युग में अन्य भारतीय भाषाओं की भांति विभिन्न प्रवृत्तियों तथा काव्य धाराओं में सृजन कर राजस्थानी रचनाकारों ने राजस्थानी काव्य परंपरा को समृद्ध किया है। इस समृद्ध परंपरा का अध्ययन करना इस प्रश्न पत्र का उद्देश्य रहा है।

उपयोगिता

प्राचीन एवं मध्यकाल में तो राजस्थानी रचनाकारों ने अपने शासकों को अपनी वीरता को बनाएं रखने तथा स्वाभीमान के लिए संघर्ष करने की प्रेरणा दी थी लेकिन आधुनिक युग के प्रारंभ में अंग्रेजों की दासता से मुक्ति हेतु प्रेरणा देने वाला भी पहला कवि राजस्थानी ही था। इसके पश्चात् भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में संघर्ष हेतु प्रेरित करने वाला अनेक रचनाएं और उनके रचनाकार सामने आये हैं। जिनका विस्तृत अध्ययन आवश्यक और उपयोगी है।

आधुनिक राजस्थानी काव्य परंपरा में स्वातत्र्योत्तर युग में अनेक काव्य धाराओं और प्रवृत्तियों को आधार बनाकर काव्य सृजन हुआ है। उस परंपरा का अध्ययन का अध्ययन भी राजस्थानी साहित्य की आधुनिक काव्य परंपरा के लिए आवश्यक उपयोगी सिद्ध होगा।

अध्ययन क्षेत्र

1. आधुनिक राजस्थानी काव्य परंपरा का अध्ययन
2. स्वातंत्र्योत्तर राजस्थानी काव्य परंपरा में परिवर्तन के आयाम
3. आधुनिक राजस्थानी प्रबंध एवं मुक्तक काव्य
4. आधुनिक राजस्थानी नवीन भाव बोधमय काव्य

प्रथम इकाई – आधुनिक राजस्थानी काव्य परंपरा के विभिन्न चरण

द्वितीय इकाई – पाठ्यपुस्तकों पर आधारित सप्रसंग व्याख्या

तृतीय इकाई – पाठ्यपुस्तक : आधुनिक राजस्थानी काव्य (निर्धारित कवि) : बांकीदास, शंकरदान सामोर, केसरीसिंह बारहठ, जनकवि गणेशलाल व्यास, 'उस्ताद', भैंरूलाल, कालाबादल, माणिक्यलाल वर्मा, नारायणसिंह भाटी, चन्द्रसिंह, मेघराज मुकुल

चतुर्थ इकाई – वीर सतसई : सूर्यमल्ल मीसण (केवल प्रारंभिक 50 छंद)

पंचम इकाई – राधा : सत्यप्रकाश जोशी

पाठ्यपुस्तकें

1. आधुनिक राजस्थानी काव्य : सं. रामेश्वरदयाल श्रीमाली, प्रकाशक : साहित्य अकादमी, नयी दिल्ली।
2. वीर सतसई : सूर्यमल्ल मीसण : सं. पतराम गौड़ ईश्वरदान आशिया, कन्हैयालाल सहल, प्रकाशक राजस्थानी ग्रंथागार, जोधपुर
3. राधा : सत्यप्रकाश जोशी : प्रकाशक : राजस्थानी ग्रंथागार, जोधपुर

अभिप्रस्तावित ग्रंथ

1 आधुनिक राजस्थानी प्रेरणा स्रोत एवं प्रवृत्तियां : डॉ किरण नाहटा : चिन्मय प्रकाशन, जयपुर।

2 आधुनिक राजस्थानी कविता : डॉ श्याम वर्मा, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली

एम. ए. राजस्थानी

प्रथम सेमेस्टर

अनिवार्य पत्र (MINOR CORE ELECTIVE COURSE)

RAJ 104 (A) : राजस्थान का संत साहित्य

अथवा

RAJ 104 (B) : राजस्थानी जैन काव्य परंपरा

RAJ 104 (A) : राजस्थान का संत साहित्य

<u>पाठ्यक्रम उद्देश्य, उपादेयता एवं अध्ययन क्षेत्र</u>

<u>उद्देश्य एवं उपादेयता</u>

- <u>उद्देश्य</u>

राजस्थानी काव्य परंपरा में सन्तों और जैन रचनाकारों का विशिष्ट योगदान रहा है। यही कारण है कि राजस्थानी काव्य की शैलियों में जैनशैली महत्त्वपूर्ण है। जैन रचनाकारों ने अपने धर्म के प्रचार के साथ–साथ ऐतिहासिक एवं लोक नायकों के चरित्रों को आधार बनाकर प्रचुर संख्या में ग्रंथों का सृजन किया है।

राजस्थान के संतों ने मध्यकाल में धार्मिक पुनर्जागरण के साथ–साथ सामाजिक क्षेत्र में एक नवीन विचारधारा के जन्म से साहित्य के विकास में भी अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दिया।

राजस्थानी जैन साहित्य परंपरा में तेरापंथ का महत्त्वपूर्ण स्थान रहा है। तेरापंथ के संतों और आचार्यों ने भी व्यापक स्तर पर राजस्थानी भाषा साहित्य सृजन कर राजस्थानी साहित्य की समृद्ध किया है।

- उपयोगिता

प्रथम सेमेस्टर के चतुर्थ प्रश्न पत्र में राजस्थानी साहित्य के विविध रूपों और भावभूमि को लेकर जो साहित्य सृजन हुआ है उसके अध्ययन का अवसर प्राप्त होगा।

राजस्थानी साहित्य के मध्यकाल को साहित्य इतिहास का स्वर्ण युग कहा जाता है। इस साहित्य सामग्री के अध्ययन से विद्यार्थी को उस साहित्यिक संपदा का विस्तृत और गहन अध्ययन करने का अवसर प्राप्त होगा।

अध्ययन क्षेत्र

1. मध्यकालीन राजस्थान में धार्मिक परिस्थितियां प्रवृत्तियां
2. राजस्थान के संत सम्प्रदाय : प्रवर्त्तक, शाखांए एवं स्थान
3. राजस्थान के प्रमुख संत सम्प्रदायों का विशेष
   अध्ययन 1. दादू 2. रामस्नेही 3. निरजंणी 4. लालदासी सम्प्रदाय 5. विश्नोई संप्रदाय, प्रमुख संत कवि एवं उनका साहित्य
4. राजस्थानी संत साहित्य एवं दर्शन की विशेषताएं
5. दादू वाणी का विशेष अध्ययन
6. राजस्थान के संतों का समाज, संस्कृति और दर्शन का अध्ययन

प्रथम इकाई–मध्यकालीन राजस्थान में धार्मिक परिस्थितियां परिस्थितियां प्रवृत्तियां
द्वितीय इकाई –मध्यकालीन राजस्थानी साहित्य में संतों का प्रादुर्भाव–संत काव्य की विशेषताएं
तृतीय इकाई–राजस्थान में दादू एवं रामस्नेही संप्रदाय : प्रवर्त्तक, पीठ, प्रमुख विशेषताएं रचनाएं–रचनाकार
चतुर्थ इकाई–राजस्थान में लालदास एवं विश्नोई संप्रदाय : प्रवर्त्तक पीठ, प्रमुख विशेषताएं रचनाएं और रचनाकार
पंचम इकाई–राजस्थानी संत साहित्य को राजस्थान के समाज, साहित्य, संस्कृति और दर्शन की देन।

अभिप्रस्तावित ग्रंथ

1. मध्यकालीन राजस्थान में धार्मिक आंदोलन, डॉ. पेमाराम : प्रकाशक अर्चना प्रकाशन, अजमेर
2. राजस्थान के प्रमुख संत एवं लोक देवता : डॉ दिनेशचन्द्र शुक्ल : राजस्थानी ग्रंथागार, जोधपुर
3. संत कवि दादू : रामनिवास, साहित्य अकादमी, नयी दिल्ली
4. राजस्थानी संत साहित्य : वसुमति शर्मा : प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान

एम. ए. राजस्थानी

प्रथम सेमैस्टर

RAJ 104 (B) : राजस्थानी जैन काव्य परंपरा

अध्ययन क्षेत्र

1. राजस्थानी साहित्य परंपरा में जैन रचनाकार–आदिकाल एवं मध्यकाल
2. राजस्थानी जैन काव्य परंपरा विभिन्न काव्य रूप–रासो फागु, वेलि, विवाहलो, पवाडा, बारहमासा, सिलोका, स्तवन, हीयाली चरित आदि।
3. कुशललाभ– माधवानल कामकंदला
4. हेमचन्द्रसूरि–गोराबादिल चरित चउपई।

प्रथम इकाई – राजस्थानी साहित्य में जैन काव्य परंपरा परिचय

द्वितीय इकाई – माधवानल कामकंदला (प्रबंध परिजात में संकलित अंश) आलोचनात्मक प्रश्न

तृतीय इकाई – गोराबादिल चरित चउपई से आलोचनात्मक प्रश्न

चतुर्थ इकाई – दोनों पाठ्यपुस्तकों से सप्रसंग व्याख्या (निर्धारित ग्रंथ)

पंचम इकाई – राजस्थानी काव्य परंपरा में जैन साहित्य के काव्य रूपों से संबंधित प्रश्न

पाठ्यपुस्तकें

1. प्रबंध परिजात : माधवानल कामकंदला : सं. रावत सारस्वत, प्रकाशक–राजस्थानी ग्रंथागार, जोधपुर
2. गोराबादिल चरित चउपई : हेमचन्द्र सूरि : सं. मुनि जिनविजय। (प्रारंभिक 101 छंद) प्रकाशक : प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर

अभिप्रस्तावित ग्रंथ

1. राजस्थान का जैन साहित्य : सं. अगरचन्द नाहटा, नरेन्द्र भानावत, कस्तूरचंद कासलीवाल, डॉ मूलचन्द सेठिया : प्रकाशक : कला एवं संस्कृति विभाग, राजस्थान सरकार, जयपुर

एम. ए. राजस्थानी

सेमेस्टर–प्रथम

अनिवार्य पत्र (VALUE ADDED COURSE)

JVB 101 : Value Education and Spirituality

क्रेडिट–4

उपलब्धियां (Course Outcome)

1. Students understand the need of value oriented education
2. Students understand the process of contemplation for value development.
3. Students understand the non-violence and culture of peace.
4. Students understand the cardinal principles of Jainism

Total Marks : 100 (70 Writen Exam+ 30 CIA)

Unit-I Value Education

- Challenges of Modern Education system and need of value education.
- Values-meaning, definitions, different views and classifications of values.
- Social duties, Responsibilities and Human Rights.

Unit- II Socio Ethical Life Style:

- Social Ethics and Jain Concepts.
- PanchMahavrat- Ahimsa, Satya, Achorya, Bmrahmcharya&Aparigrah.
- Tri Ratna- SamyakDarshan, Gyana&Charitra.
- Anekantvada

Unit-III Development of Social Harmony.

- Peace and Its Relevance in social harmony.
- Social Harmony through Conflict Management.
- Training in Non-violence.

Unit-IV Enhancement of Values in behavior-

- Development of Moral Values: Contemplation of honesty, self-discipline and Non-violence
- Contemplation of mental balance, will power and patience for development of mental values.
- Development of Emotional & Spiritual Values.

SUGGESTED READING

- Structure of Values, Mukharjee RK (1955)..................................
- Devatma' Value Education: 4 supplements to present education. Arora K. NCET, New Delhi 1999.
- Helping students ascend the steps of value education. A. Dutta. (2004)
- Values and Ethics in School Education, Luther, M. (2001) New Delhi Mc Grow Hill.
- Value Development in Higher Education, Mukhopadhya M. (Eds.) 2004)
- Human Values and Education-Rahul, S.P. (1986) Sterling New Delhi.
- Education in Human Values. Saraf (1999) Vikash Publication, New Delhi.
- Value Education: Theory and Practice, Dr. N.L. Gupta, Krishna Brothers, Ajmer, 1986.
- अमूर्तचिन्तन–आचार्यमहाप्रज्ञ, जैनविश्वभारतीप्रकाशन, लाडनूं 2001
- गांधीदर्शन शांतिमानवाधिकार, प्रो. अनिल धर, जैनविश्वभारतीसंस्थान, लाडनूं।
- विश्वशांति एवंअहिंसाप्रशिक्षण, डॉ. बच्छराजदूगड़, जैनविश्वभारतीसंस्थान, लाडनूं 2001
- जैन धर्ममेंअहिंसा, वशिष्ठनारायण सिंहा, वाराणसी।
- जैनदर्शनमननऔरमीमांसा–आचार्यमहाप्रज्ञ, आदर्शसाहित्य संघ, चूरू।

1ण अहिंसादर्शन, डॉ. अनेकान्तकुमारजैन, श्रीलालबहादुरशास्त्री सं. विद्यापीठ, नईदिल्ली।

एम. ए. राजस्थानी

द्वितीय सेमेस्टर

अनिवार्य पत्र (MAJOR COURSE)

RAJ 201 : प्राचीन एवं मध्यकालीन गद्य

पाठ्यक्रम उद्देश्य, उपादेयता एवं अध्ययन क्षेत्र

उद्देश्य एवं उपादेयता

उद्देश्य

साहित्य के विभिन्नस्वरूपों में गद्य स्वरूप को साहित्य के विकास का सुदृढ़ आधार माना जाता है। गद्य को साहित्य की कसौटी भी माना गया है। इस दृष्टि से देखे तो राजस्थानी भाषा का गद्य साहित्य की परंपरा बहुत समृद्ध मानी गयी है। जो इस साहित्य की सुदृढ़ता का परिचायक है। वात काव्य विगत आदि ऐसी गद्य विधाएं है जो विविध विष्ज्ञयों से युक्त रहकर साहित्य की विकास परंपरा को गति प्रदान करती है।

इस साहित्य में टीका और अनुवाद भी बहुत महत्त्वपूर्ण है। इस प्रश्न पत्र में राजस्थानी साहित्य की प्राचीन एवं मध्यकालीन गद्य विधाओं का विशिष्ट अध्ययन किया जाएगा।

उपयोगिता

राजस्थानी साहित्य विद्यार्थी को प्राचीन एवं मध्यकालीन गद्य परंपरा के अध्ययन का अवसर प्राप्त होगा जो व्यापक रूप से राजस्थानी साहित्य की एक महत्त्वपूर्ण विधा के अध्ययन को आधार प्रदान करेगा।

अध्ययन क्षेत्र

1. राजस्थानी साहित्य की विकास परंपरा में प्राचीन एवं मध्यकालीन गद्य की स्थिति
2. विभिन्न गद्य विधाएं और उनका स्वरूप
3. राजस्थानी गद्य की विशिष्ट विधाओं का विस्तृत अध्ययन।

प्रथम इकाई – प्राचीन एवं मध्यकालीन साहित्य : विकास–परंपरा–प्रवृत्तियां, विभिन्न विधाएं

द्वितीय इकाई – पाठ्यपुस्तक–राजस्थानी वात संग्रह–भाग–1

तृतीय इकाई – वेताल पच्चीसी : देईदान नाइताकृत : (सं) प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, जोधुपर

चतुर्थ इकाई – कुंवरसी सखळो : डॉ. मनोहर शर्मा

पंचम इकाई – सप्रसंग व्याख्या : तीनों पाठ्यपुस्तकों में से

पाठ्यपुस्तकें–

1. राजस्थानी वात संग्रह भाग–1, संपादक नरोत्तम दास स्वामी : प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, जोधुपर
2. वैताल पच्चीसी : देईदान नाइता (सं.) मुनि जिनविजय, प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर
3. कुंवरसी सांखळो : सं. मनोहर शर्मा, प्रकाशक : राजस्थानी ग्रंथागार, जोधपुर

अभिप्रस्तावित ग्रंथ

1. राजस्थानी भाषा और साहित्य : डॉ. मोतीलाल मेनारिया
2. राजस्थानी भाषा साहित्य और संस्कृति : डॉ कल्याणसिंह शेखावत : राधा पब्लिकेशन, नयी दिल्ली
3. राजस्थानी गद्य शैली का विकास : डॉ राजकुमार, गरवा राजस्थानी ग्रंथागार, जोधपुर
4. राजस्थानी गद्य का विकास : स्वरूप : डॉ. शिवचरण शर्मा 'अचल'

एम. ए. राजस्थानी

द्वितीय सेमेस्टर

अनिवार्य पत्र (MAJOR COURSE)

RAJ 202 : प्राचीन एवं मध्यकालीन राजस्थानी पद्य

पाठ्यक्रम उद्देश्य, उपादेयता एवं अध्ययन क्षेत्र

उद्देश्य एवं उपादेयता

उद्देश्य

राजस्थानी साहित्य की काव्य परंपरा का भारतीय काव्य परंपरा में महत्त्वपूर्ण स्थान है। राजस्थानी काव्य परंपरा को वीरकाव्य परंपरा का पर्याय माना गया है। लेकिन व्यापक रूप से राजस्थानी काव्य परंपरा का अध्ययन किया जाए तो यह ज्ञात होता है कि वीरता के साथ–साथ भक्ति, श्रृंगार परक काव्य का भी प्रचुरता से सृजन हुआ है। आधुनिक काल में तो अन्य भारतीय भाषा के समान ही विभिन्न काव्य प्रवृत्तियों धाराओं और स्वरूपों में सृजन हुआ है।

प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य परंपरा एवं उसकी विभिन्न काव्य धाराओं के विशिष्ट अध्ययन हेतु इस पाठ्यक्रम का संयोजन किया गया है।

उपयोगिता

इस पाठ्यक्रम की पाठ्यसामग्री से विद्यार्थी प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य परंपरा का अध्ययन कर इस काव्य परंपरा के महत्त्व को राजस्थानी काव्य परंपरा के इतिहास में अंकित कर सकेगा।

राजस्थानी काव्य परंपरा की वीर, भक्ति एवं रीतिपरक रचनाओं का अध्ययन कर सकेगा। इस काव्य परंपरा में कई काव्य रचनाओं में वीरता, भक्ति एवं श्रृंगार का सुसंयोजन भी किया गया है। इन रचनाओं से विद्यार्थी इस रसत्रिवेणी के अध्ययन का अवसर भी प्राप्त कर सकेगा।

अध्ययन क्षेत्र

1. राजस्थानी काव्य परंपरा का विस्तृत अध्ययन
2. प्राचीन एवं मध्यकालीन राजस्थानी काव्य की परिस्थितियां, प्रवृत्तियां एवं विशेषताएं
3. प्राचीन एवं मध्यकालीन राजस्थानी काव्य परंपरा की प्रमुख रचनाएं एवं रचनाकार

प्रथम इकाई – प्राचीन एवं मध्यकालीन राजस्थानी काव्य परंपरा इतिहास एवं विकास परंपरा–प्रवृत्तियां प्रमुख रचनाएं एवं रचनाकार

द्वितीय इकाई – पाठ्यपुस्तकों में सप्रसंग व्याख्या

1. रणमल्ल छंद (प्रारंभिक 36 छंद) व्याख्या हेतु
2. क्रिसन रुकमणी री वेलि (प्रारंभिक 50 छंद)
3 रघुनाथ रुपक (प्रारंभिक 50 छंद)

तृतीय इकाई – 'रणमल्ल छंद' (आलोचनात्मक प्रश्न)
चतुर्थ इकाई – क्रिसण रुकमणी री वेलि (आलोचनात्मक प्रश्न)
पंचम इकाई – रघुनाथ रुपक (आलोचनात्मक प्रश्न)

पाठ्यपुस्तकें

1. रणमल्ल छंद : मूलचन्द प्राणेश : भारतीय विद्यामंदिर शोध प्रतिष्ठान, बीकानेर
2. क्रिसण रूकमणी वेलि : नरोत्तम दास स्वामी, श्रीराम मेहरा एडं संस, आगरा
3. रघुनाथ रुपक (कवि मंछ) : सं. महताब चंद खारेड, साहित्य अकादमी, नई दिल्ली

एम. ए. राजस्थानी
द्वितीय सेमेस्टर
अनिवार्य पत्र (MAJOR COURSE)
RAJ 203 : राजस्थानी वचनिका साहित्य

पाठ्यक्रम उद्देश्य, उपादेयता एवं अध्ययन क्षेत्र

उद्देश्य एवं उपादेयता

उद्देश्य

काव्य रूपों की परंपरा में गद्य एवं पद्य रूपों की मिश्रित रचना को चम्पूकाव्य का नाम दिया गया है। राजस्थानी साहित्यिक परंपरा में इस प्रकार के चम्पूकाव्यों की वचनिका एवं दवावैत का नाम दिया गया है। राजस्थानी साहित्य की मध्यकालीन परंपरा में इस प्रकार की रचनाओं का सृजन होता रहा है। वचनिका और दवावैत परंपरा का काव्य रूप वो समान ही है लेकिन भाषा के आधार पर इन दोनों में भेद किया जाता है जो रचना मुख्यतः राजस्थानी भाषा में ही लिखी गयी है उसे 'वचनका' या 'वचनिका' कहा गया है जबकि फारसी शब्दों के बाहुल्य के साथ जिस रचना का सृजन हुआ है उसे दवावैत का नाम दिया गया है।

राजस्थानी साहित्य की यह विधा इतिहास से बहुत निकटता से जुड़ी रही है क्योंकि वचनिका रचना नायक प्रधान रही है और वे नायक राजस्थान के इतिहास से जुड़े रहे हैं या वे नायक या तो किसी राज्य के शास रहे हैं अथवा विशिष्ट वीर रहे हैं जिनका इतिहास से गहरा जुड़ाव रहा है इस रूप में इस क्रम की रचनाएं साहित्य तथा इतिहास से संबंधित रहने के कारण दोनों ही क्षेत्रों में अत्यंत महत्त्वपूर्ण रही है।

इन रचनाओं में कथाक्रम को पद्य के माध्यम से गति प्रदान की गयी है तो गद्य से वर्णनात्मकता की विशेषता सम्मिलित हो गयी है। इस रूप में भाषा और शैली की दृष्टि से ये रचनाएं विशिष्ट है।

उपयोगिता

राजस्थानी के ऐतिहासिक ग्रंथों के अतिरिक्त भी कुछ ऐसे ग्रंथ है जिनसे ऐतिहासिक तथ्य एवं तिथिक्रमों की पुष्टि होती है। वचनिका और दवावैत भी इस प्रकार की रचनाएं है जिनसे इतिहास के सूत्र प्राप्त होते हैं।

वचनिका और दवावैत साहित्य का अध्ययन साहित्य एवं इतिहास की दृष्टि से बहुत महत्त्वपूर्ण एवं उपयोगी सिद्ध होगा।

अध्ययन क्षेत्र

1 प्राचीन राजस्थानी गद्य एवं चम्पूकाव्य

2 राजस्थानी वचनिका एवं दवावैत विधा परिचय, विशेषताएं एवं अन्तर

3 प्रमुख वचनिका एवं दवावैत रचनाएं

4 वचनिका का विशिष्ट अध्ययन

प्रथम इकाई – प्राचीन राजस्थानी गद्य एवं चम्पूकाव्य परिचयात्मक अध्ययन

द्वितीय इकाई – वचनिका एवं दवावैत परंपरा : प्रमुख रचनाएं एवं रचनाकार

तृतीय इकाई – अचलदास खींची री वचनिका : शिवदास गाडण

चतुर्थ इकाई – वचनिका रतनसिंह महेसदासोत री : जग्गा जी खिडिया री कही

पंचम इकाई – पाठ्यपुस्तकों में से सप्रसंग व्याख्या (निर्धारित अंश)

1. अचलदास खींची री वचनिका–सम्पूर्ण
2. वचनिक रतनसिंह महेसदासोत री (प्रारंभ से हाथियो के बखाण तक)

पाठ्यपुस्तकें

1 अचलदास खींची री वचनिका : शिवदास गाडण, : सं. भूपतिराम साकरिया, प्रकाशक : राजस्थानी ग्रंथागार, जोधपुर

2 वचनिका रतनसिंह महोदसदासोत री : जग्गा जी खिडिया री कही : संपाः शम्भूसिंह मनोहर प्रकाशक : पंचशील प्रकाशन, जयपुर

अभिप्रस्तावित ग्रंथ

1. राजस्थानी भाषा और साहित्य : डॉ. मोतीलाल मेनारिया, राजस्थानी ग्रंथागार, जोधपुर
2. राजस्थानी वचिनकाएं : डॉ. आलमशाह खान, राजस्थानी साहित्य संगम (अकादमी), उदयपुर
3. राजस्थानी गद्य : डॉ रामकुमार गरर्वा, राजस्थानी ग्रंथागार, जोधपुर
4. Histoty of Rajasthan : Literature : Dr Hiralal Maheswaro : Sahitua Akedami, New Delhi

RAJ 204 (A) : मींरा बाई अथवा RAJ 204 (B) : कन्हैयालाल सेठिया में से कोई एक

एम. ए. राजस्थानी

द्वितीय सेमेस्टर

अनिवार्य पत्र (MINOR ELECTIVE COURSE)

RAJ 204 (A) : मींरा बाई

पाठ्यक्रम उद्देश्य, उपादेयता एवं अध्ययन क्षेत्र

उद्देश्य एवं उपादेयता

उद्देश्य

राजस्थानी भूमि संतों और भक्तों की भूमि रही है। अनेक संतों और भक्तों ने जन्म लेकर यहां के जन–जन के हृदय में भक्ति का भाव जागृत किया है तथा ईश्वर की आराधना का मार्ग प्रशस्त किया है। इन भक्तों ने अपने आराध्य की आराधना के साथ–साथ साहित्य सृजन भी किया है। इस रूप से उन्होंने भक्ति परक साहित्य का सृजन कर दिया है और वह साहित्य, राजस्थानी साहित्य की अमूल्य नीधि बनी हुई है। इन भक्त साहित्यकारों में मीरांबाई का नाम प्रमुख रहा है। यद्यपि वे मूल रूप से भक्त है लेकिन इनके द्वारा सृजित साहित्य भी बहुत महत्त्वपूर्ण है।

मीरांबाई का अध्ययन एक भक्त, एक साहित्यकार और एक सामाजिक क्रांति की अग्रदूत के रूप में किया जाना आवश्यक है क्योंकि इन्होंने इन सभी क्षेत्रों में क्रांतिकारी परिवर्तन किये। इसी कारण राजस्थान के साहित्य तथा इतिहास में मीरांबाई का मूल्यांकन सम्यक् रूप से करना आवश्यक है। इसी उद्देश्य से लेकर इस पाठ्यक्रम का संयोजन किया गया है।

उपयोगिता

राजस्थानी साहित्य भक्ति परंपरा एवं सामाजिक क्रांति के क्षेत्र में अपनी विशिष्ट भूमिका रखने वाली मीरांबाई का सम्यक अध्ययन करना बहुत आवश्यक और उपयोगी है जिससे मध्यकाल में भक्ति के क्षेत्र में भक्ति का नीवन स्वरूप प्रस्तुत करने, समाज में बंधनों और रूढ़ियों को छोड़कर खुले रूप से ईश्वर की भक्ति में स्वयं को समर्पित कर देना, पदों के माध्यम से सरल भाषा में अपने आराध्य की आराधना करना अपने आपमें बहुत महत्त्वपूर्ण है। मीरांबाई का यह अध्ययन करना अपने आप में बहुत महत्त्वपूर्ण है। मीरांबाई का यह अध्ययन विद्यार्थियों की उनकी भूमिका को स्थापित करने के उद्देश्य से उपयोगी सिद्ध होगा।

अध्ययन क्षेत्र

1 राजस्थानी भक्ति काव्य परंपरा–सगुण एवं निर्गुण परंपरा
2 राजस्थानी भक्तिकाव्य परंपरा में कृष्ण भक्ति
3 मीरांबाई : वंश एवं परिवार परिचय, बाल्यकाल, विवाह, वैधव्य, मेवाड में जीवन, तीर्थयात्राएं, देहावसान
4 मीरां की भक्ति–कान्ताभाव
5 मीरां के पद–साहित्यिक विश्लेषण
6 मीरां के व्यक्तित्व और कृतित्व में चेतना एवं सामाजिक परिवर्तन के रूपक

पाठ्यपुस्तक : मीरा पदावली : सं. पुरोहित हरिनारायण, प्रकाशक : प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर (व्याख्यान हेतु प्रारम्भिक 100 पद)

प्रथम इकाई – राजस्थानी भक्ति काव्य परंपरा–सगुण निर्गुण एवं संत परंपरा

द्वितीय इकाई – मीराबाई–व्यक्तित्व–जीवन वृत–वंश परम्परा परिचय, विवाह, वैधव्य, गृहत्याग, तीर्थ यात्राएं, मीरांबाई के जीवन में लोक चेतना एवं विद्रोही स्वर

तृतीय इकाई – मीराबाई की भक्ति की विशेषताओ का विश्लेषण।

चतुर्थ इकाई – मीराबाई के काव्य की काव्यगत विशेषताएं

पंचम इकाई – 'मीरांपदावली' संग्रह में से सप्रसंग व्याख्या।

पाठ्यपुस्तक : मीरा पदावली : सं. पुरोहित हरिनारायण, प्रकाशक : प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर (प्रारंभिक 100 छंद)

अभिप्रस्तावित ग्रंथ

1. मीराबाई : व्यक्तित्व और कृतित्व : डॉ. कल्याणसिंह शेखावत
2. मीराबाई के काव्य में लोकचेतना : डॉ. आलमशाह खान
3. मीरांबाई : डॉ. हीरालाल माहेश्वरी
4. मीरांबाई : डॉ. सी.एल. प्रभात

एम. ए. राजस्थानी
द्वितीय सेमेस्टर
अनिवार्य पत्र (MINOR ELECTIVE COURSE)
RAJ 204 (B) : कन्हैयालाल सेठिया

पाठ्यक्रम उद्देश्य, उपादेयता एवं अध्ययन क्षेत्र

उद्देश्य एवं उपादेयता

उद्देश्य

आधुनिक राजस्थानी काव्य परंपरा में स्वतंत्रता से पूर्व एवं स्वातंत्र्योत्तर युग में प्रगतिशील चेतना को लेकर आने वाले कवि कन्हैयालाल सेठिया का योगदान किसी भी रूप में कम नहीं आंका जा सकता है। उनकी दार्शनिक विचारधारा, नवीन भाव बोध एवं नवीन बिम्ब विधान को लेकर जो रचनाएं प्रस्तुत की गयी वे रचनाएं बहुत महत्त्वपूर्ण है। इसके अतिरिक्त उनके गद्य गीत भी राजस्थानी साहित्य की अमोलक धरोहर है।

कवि कन्हैयालाल सेठिया के व्यक्तित्त्व और कृतित्त्व को लेकर विशेष साहित्यकार के रूप में अध्ययन की दृष्टि से इस प्रश्न पत्र के पाठ्यक्रम का संयोजन किया गया है। इस अध्ययन से कवि कन्हैयालाल सेठिया से उनकी रचनाओं के विश्लेषण का अवसर प्राप्त होगा।

उपयोगिता

आधुनिक राजस्थानी काव्य परंपरा में कवि पद्मश्री कन्हैयालाल सेठिया के अवदानको रेखांकित कर उनकी प्रज्ञा, प्रतिभा तथा राजस्थानी भूमि और राजस्थानी साहित्य के प्रति उनके समर्पण को अंकित करने में यह प्रश्न पत्र विशिष्ट रूप से उपयोगी सिद्ध होगा।

अध्ययन क्षेत्र

1 राजस्थानी काव्य परंपरा

2 आधुनिक काव्य परंपरा के परिवर्तित स्वर

3 कन्हैयालाल सेठिया व्यक्तित्व–वंश, जन्म, व्यवसाय

4 कन्हैयालाल सेठिया की काव्य कृतियों का अध्ययन

5 कन्हैयालाल सेठिया की काव्य कृतियों का काव्यात्मक विश्लेषण

6 कन्हैयालाल सेठिया के गद्यगीत

·7 कन्हैयाला सेठिया की कृतियों में राजस्थानी भाषा, साहित्य संस्कृति के प्रति दृष्टिकोण

प्रथम इकाई – आधुनिक राजस्थानी काव्य परंपरा–प्रगतिशील चेतना

द्वितीय इकाई – कन्हैयालाल सेठिया व्यक्तित्व : जन्म, वंश, परिवार, व्यवसाय, काव्य साधना, राजस्थानी साहित्य को अवदान

तृतीय इकाई – निर्धारित पाठ्यपुस्तक 'लीलटांस' से आलोचनात्मक प्रश्न : भाव, भाषा, शिल्पविधान, बिम्ब एवं प्रतीक योजना

चतुर्थ इकाई – निर्धारित पाठ्य पुस्तक 'गल़गचिया' में से आलोचनात्मक प्रश्न

पंचम इकाई – निर्धारित पाठ्यपुस्तकों से सप्रसंग व्याख्या।

पाठ्यपुस्तकें–

1. लीलटांस
2. गल़गचिया

अभिप्रस्तावित ग्रंथ

1. कन्हैयालाल सेठिया : समग्र : (सं.) जयप्रकाश
2. कन्हैयालाल सेठिया : मोनोग्राफ : डॉ. घनश्यामनाथ कच्छावा, केन्द्रीय साहित्य अकादमी, नयी दिल्ली

Skill Enhancement Course (Choose any one)

एम. ए. राजस्थानी

सेमेस्टर–द्वितीय

ऐच्छिक पत्र (SKILL ENHANCEMENT COURSE)

RAJ 205 : ~~पाठ–सम्पादन, अनुवाद, वर्तनी–शुद्धि एवं पाण्डुलिपि पठन विधि~~

पाण्डुलिपि विज्ञान, पठनविधि, पाठसंपादन एवं अनुवाद

क्रेडिट–4

उपलब्धियां (Course Outcome)

1. पाठ–संपादन विधि की जानकारी
2. अनुवाद–विधि की जानकारी
3. वर्तनी–शुद्धि की जानकारी
4. लिपि–परिचय एवं पाण्डुलिपि पठन की जानकारी

पूर्णांक : 100 (70 लिखित परीक्षा + 30 CIA)

इकाई–1 पाठ–सम्पादन

परिचय, सिद्धान्त और अनुप्रयोग, विधियाँ, सावधानियाँ

इकाई–2 अनुवाद–कार्य (संस्कृत–प्राकृत के विशेष सन्दर्भ में)

परिचय, अनुवाद के प्रकार (शब्दनुवाद, भावानुवाद, छायानुवाद, रूपान्तरण, व्याख्यानुवाद) अनुवाद के सिद्धान्त समतुल्यता का सिद्धान्त, अर्थ सम्प्रेषण का सिद्धान्त, व्याख्या का सिद्धान्त), अनुवाद के साधन (अनुवादक, शब्दकोश, विषय–विशेषज्ञ, मशीनी उपकरण)।

इकाई–3 वर्तनी शुद्धि–

अशुद्धि संशोधन के चिन्हों का ज्ञान, सावधानियाँ, विषयवस्तु एवं भाषा का ज्ञान।

इकाई–4 लिपि–परिचय एवं पाण्डुलिपि का सामान्य परिचय

प्रमुख लिपियों का सामान्य परिचय (शारदा, ब्राह्मी, खरोष्ठी) पाण्डुलिपि का सामान्य परिचय, (पाण्डुलिपि का अर्थ एवं परिभाषाएँ, पाण्डुलिपि के भेद–गुहालेख या भित्तिचित्र, मृदा अभिलेख, पेपीरस अभिलेख, काष्ठ–पट्टी अभिलेख, चर्मपत्र या पार्चमेण्ट), पाण्डुलिपि के प्रकार–लिप्यासन के आधार पर, आकार के आधार पर, लेखन शैली के आधार पर, चित्र–सज्जा के आधार पर।

सन्दर्भ–ग्रन्थः–

1. अनुवाद : अवधारणा और आयाम, सत्यदेव मिश्र, रामाश्रय सविता, सुलभ प्रकाशन, लखनऊ, 1998
2. अनुवाद कला : सिद्धान्त और प्रयोग, डॉ. कैलाश चन्द्र भाटिया, तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली, 2000
3. Editing, Principles and Practices, Dr. Rabindranath, Regal Publication, New Delhi, 2014
4. सामान्य पाण्डुलिपिविज्ञान, डॉ. महावीरप्रसाद शर्मा, अपभ्रंश साहित्य अकादमी, राजस्थान, प्रथम संस्करण, 2003
5. सामचार सम्पादन और पृष्ठ–सज्जा, डॉ. रमेश जैन, राजस्थान प्रकाशन, जयपुर, द्वितीय संस्करण, 1997
6. भाषा–विज्ञान एवं भाषा–शास्त्र, डॉ. कपिलदेव द्विवेदी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, पंचदश संस्करण, 2016

एम. ए. राजस्थानी

सेमेस्टर–द्वितीय

ऐच्छिक पत्र (SKILL ENHANCEMENT COURSE)

JVB 201 : Information Technology and Computer

क्रेडिट–4

उपलब्धियां (Course Outcome)

1. Expose the students to the fundamentals of the IT.
2. Students gain the introductory knowledge of the MS-Windows
3. Practically students able to use MS-PowerPoint, MS-Word, MS-Excel and create their own blog.

Total Marks : 100 (70 Writen Exam+ 30 CIA)

Unit I: Introduction to Computers and Windows

- Application of Computers
- Block Diagram of Computer
- Input and Output devices
- Types of software
- Introduction to Operating system: Windows
- Functions of operating system
- How you can Fast your Computer or Maintenance of computer

Unit II: Concept of MS Word and MS Excel and its application

- MS Word Window Layout
- Creating and Formatting Documents
- Editing Documents
- Working with Tables.
- Mail Merge, Macro Recording, Thesaurus, Printing Document (How to Use Page-Setup Before Printing)
- Introduction to Excel and its Applications
- Concept of workbook and worksheet
- Layout of Worksheets
- Use of basic formula and functions
- Sorting, Filtering and charts
- Report Generation (Pivot Table)
- Security or Protecting Worksheets

Unit III: Introduction & Application of MS-PowerPoint

- PowerPoint Slide Creation
- Slide Layout
- Views

- Adding content to slide- Text, Graphics, Sound, Video
- Applying Slide Transition
- Custom Animation
- Slide Show
- Working With Image or ClipArt (how you edit clipart image)

Unit IV: Internet

- Introduction to internet
- ISP (Internet Services Providers)
- About Modem, Type of Internet Connection
- Web browser – its functions
- Concept of search engine, What is surfing
- Social Networking site/How to pay online bill/How to book tickets online/How to use Paytm
- Website and its types
- Searching, downloading and uploading
- Basic concepts of sending and receiving E-mail
- Blog uses and creation of blog
- How to Create Simple web page (or Personal web page)

Course Contents (Practical) :

- Creating document in MS-Word like Advertisement, Letter, Tables, Charts etc.
- Creation of Simple Worksheet like Mark sheet, Pay slip using MS-Excel.
- Creation of Power Point Presentation on various themes.

Outcome:

- Students will apply the knowledge of IT practically in their day-to-day life.
- Students will be able to create well-formatted documents, attractive presentations and calculation part through excel.
- Students will be able to create their own blog.

SUGGESTED READING/Website

1. http://www.tutorialspoint.com/computer_fundamentals/index.htm
2. http://www.gcflearnfree.org/office
3. Fundamentals of computers (English) Ist Edition by ReemaThareja, Oxford University Press, 2014
4. Introduction to Computer by Peter Norton, Tata McGraw hill
5. Introduction to Computer by Gary B Shelly

एम. ए. राजस्थानी
सेमेस्टर–द्वितीय
ऐच्छिक पत्र (SKILL ENHANCEMENT COURSE)
JVB 202 : Astrology and Vastu
क्रेडिट–4

उपलब्धियां (Course Outcome)

Course Outcomes

- It will Create an interest in Indian Astrology
- It will usefull for the knowledge of TrediationalArchitecht
- It will usefull for daily life
- Students will acquise a fundamental outlook about their life and future

Unit-I : Back Ground of the Knowledge of Panchang

- Knowledge of Tithi
- Knowledge of var
- Knowledge of Naxatra
- Knowledge of Yoga
- Knowledge of Karan
- Knowledge of Dinman&Ratrimaan
- Knowledge of Time of Sunrise & Sunset

Unit-II :Basic Knowledge of Muhoort

- Muhoort about Marrige
- Muhoort about Business
- Muhoort about Vastushanti
- Muhoort about Grahshanti
- Muhoort about Vidyarambh
- Muhoort about Griharambh
- Muhoort about Grihpravesh

Unit-III :Basic Knowledge of Horoscope

- Introduction of Horoscope
- How to make Herosewpe
- Knowledge of 12 Bhavs
- Knowledge of Rashi's
- Knowledge of Graha's
- Knowledge of Sequence of Rashi's&Graha's

Unit-IV :Basic Knowledge of Vastu

- Knowledge of Utility of Eirth
- Examine of Eirth
- Knowledge of Khat-Chakra
- Knowledge of Plots and DeisionForUtilise
- Knowledge of Prakoshtha's
- Knowledge of Vedh's
- Deision of Build Aria

Text Books

- BrihadAvkahadaChakram- GauriNathShastri, ChaukhambaVidyaBhawan, Varanasi
- PanchangVigyanam – Bhaskar Sharma, HansaPrakashan, Jaipur
- KundaliDarpan – NarayandattShrimali, Manoj Pocket Books, New Delhi

एम. ए. राजस्थानी

सेमेस्टर–द्वितीय

ऐच्छिक पत्र (SKILL ENHANCEMENT COURSE)

JVB 203 : Choose any Course from MOOC's related to Skill Enhancement

क्रेडिट–4

पूर्णांक : 100 (70 लिखित परीक्षा + 30 CIA)

Note - Students can choose this course from MOOC's Portal related to Skill Enhancement .

एम. ए. राजस्थानी

तृतीय सेमेस्टर

अनिवार्य पत्र (MAJOR COURSE)

RAJ 301 : राजस्थानी लोक साहित्य

पाठ्यक्रम उद्देश्य, उपादेयता एवं अध्ययन क्षेत्र

उद्देश्य एवं उपादेयता

उद्देश्य

साहित्य का प्रारंभिक स्वरूप मौखिक और श्रुतिनिष्ठ परंपरा में ही रहा है। श्रुतिनिष्ठ परंपरा के आधार पर ही साहित्यिक रचनाएं एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक स्थानान्तरित होती रही हैं। लोक की सम्पूर्ण ज्ञान राशि इसी साहित्यिक परंपरा में संचित रही है। जिसे लोक साहित्य का नाम दिया गया है। लोक कथा, लोकगीत, लोक नाट्यों और लोकोक्तियों के रूप में यह साहित्यिक कोष जन–जनके कंठों का हार बना हुआ है।

राजस्थानी लोक साहित्य परंपरा भी बहुत प्राचीन और समृद्ध रही है यह साहित्यिक परंपरा अभिजात्य साहित्य परंपरा से बहुत भिन्न रही है। राजस्थानी लोक साहित्य की विभिन्न विधाएं बहुत महत्त्वपूर्ण है जिनमें लोककथाएं जिन्हें 'वात' कहा गया है तथा इसके साथ–साथ राजस्थानी लोक गीत भी राजस्थानी लोक साहित्य और संस्कृति में अपना विशिष्ट स्थान रखते हैं। इस साहित्य सपंदा का अध्ययन, संकलन और संरक्षण करना बहुत आवश्यक है, क्योंकि समय के परिवर्तन के साथ इस साहित्य को जानने और समझने वाली पीढ़ी समाप्त हो रही है। अतः इसके महत्त्व को देखते इस प्रश्न पत्र को पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया गया है।

उपयोगिता

राजस्थानी लोक साहित्य की इस धरोहर का अध्ययन करना बहुत आवश्यक है क्योंकि समय के साथ–सयाथ यह साहित्यिक धारा लुप्त होती जा रही है क्योंकि वाणीनिष्ठ होने के कारण जिनसे यह जुड़ी हुई उनके पश्चात उसके स्मृति में रखने वाला और संभालने वाला नहीं रहेगा। इसलिए इसके अध्ययन संकलन और संरक्षण की दृष्टि से यह अध्ययन महत्त्वपूर्ण रहेगा और नयी पीढ़ी के लिए भी इस साहित्यिक संपदा को समझने में सहायक सिद्ध होगा।

अध्ययन क्षेत्र

1. लोक का अर्थ और परिभाषा ' लोक मानस का अर्थ, लोकतत्त्व
2. लोक साहित्य का सामान्य परिचय और विशेषतांए लोक साहित्य और अभिजात्य साहित्य में अन्तर।
3. राजस्थानी लोक साहित्य–सामान्य परिचय और वर्गीकरण राजस्थानी लोक साहित्य की विविध विधाएं
4. राजस्थानी लोककथा, लोकगीत और लोकोक्ति साहित्य का विशिष्ट अध्ययन।

प्रथम इकाई – लोक का अर्थ और परिभाषा लोक मानस का स्वरूप, तत्त्व और विशेषताएं
द्वितीय इकाई – लोक साहित्य–विशेषताएं, अभिजात्य साहित्य से तुलनात्मक अध्ययन
तृतीय इकाई – राजस्थानी लोक साहित्य की विभिन्न विधाओं का परिचय।
चतुर्थ इकाई – राजस्थानी लोककथा और लोकोक्ति, साहित्य का विशेष अध्ययन
पंचम इकाई – राजस्थानी लोकगीत और लोकनाट्य साहित्य का विशेष अध्ययन

अभिप्रस्तावित ग्रंथ

1. राजस्थानी लोकसाहित्य का सैद्वान्तिक विवेचन : डॉ. सोहनदान चारण : प्रकाशक राजस्थानी ग्रंथागार, जोधपुर
2. राजस्थानी लोकसाहित्य : नानूराम संस्कर्ता, प्रकाशक : राजस्थानी ग्रंथागार, जोधपुर
3. राजस्थानी लोक साहित्य एवं संस्कृति : डॉ. नंदलाल कल्ला : राजस्थानी ग्रंथागार, जोधपुर
4. राजस्थान वात साहित्य : डॉ पूनम दइया : राजस्थान साहित्य संगम (अकादमी), उदयपुर
5. राजस्थानी लोक साहित्य : डॉ. रामप्रसाद दाधीच, राजस्थानी ग्रंथागार, जोधपुर

Sanyasrali

एम. ए. राजस्थानी
तृतीय सेमेस्टर
अनिवार्य पत्र (MAJOR COURSE)
RAJ 302 : राजस्थानी लोक संस्कृति

पाठ्यक्रम उद्देश्य, उपादेयता एवं अध्ययन क्षेत्र

उद्देश्य एवं उपादेयता

उद्देश्य

साहित्य और संस्कृति का बहुत गहरा संबंध रहा है। मानव के विकास के साथ–साथ संस्कृति में परिवर्तन भी हुआ है। भारतीय संस्कृति का विश्व सांस्कृतिक परंपरा में बहुत महत्त्वपूर्ण स्थान रहा है। भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों के कारण ही भारत सभ्यता की विशिष्टताओं को आज हम देख पा रहे हैं और उन्हीं मूल्यों के कारण वह सभ्यता सुरक्षित रह सकी है। उन सांस्कृतिक तत्त्वों तथा विशेषताओं का अध्ययन करना बहुत आवश्यक है।

राजस्थानी संस्कृति, भारतीय संस्कृति को अपने में समेटे रही है उसके साथ–साथ अपनी भी कुछ विशेषताओं के कारण भारतीय सांस्कृतिक परंपरा में इसका विशेष स्थान रहा है। राजस्थान में लोक जीवन से जुड़े विभिन्न संस्कार रीतिरिवाज व्रत, मेले, तीर्थ, उत्सव, तीज त्यौंहार लोक विश्वास, शकुन, मान्यताओं की विशिष्टताओं के कारण राजस्थानी लोक संस्कृति बहुत महत्त्वपूर्ण है। आधुनिकता के प्रभाव के कारण अब सांस्कृतिक मूल्यों में परिवर्तन आ रहा है। जनसामान्य अपने संस्कृति तथा सांस्कृतिक मूल्यों को भूलाते जा रहे हैं। ऐसे में राजस्थानी लोक संस्कृति के विविध पक्षों के अध्ययन को लेकर यह पाठ्यक्रम संयोजित किया गया है।

उपयोगिता

राजस्थानी लोक संस्कृति विषयक अध्ययन को विद्यार्थी अपने परंपरागत सांस्कृतिक मूल्यों को पहचान पाएंगे तथा संस्कृति के तत्त्वों के संरक्षण के प्रति उनमें चेतना जागृत हो पाएगी। इस दृष्टि से यह पाठ्यक्रम अत्यंत उपयोगी है। राजस्थानी भाषा साहित्य और संस्कृति का अध्ययन आज विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए भी उपयोगी हो रहा है। इस दृष्टि से इस पाठ्यक्रम से उन्हें अधिकृत एवं उपयोगी सामग्री उपक्रम से उन्हें अधिकृत एवं उपयोगी सामग्री उपलब्ध होगी।

अध्ययन क्षेत्र

1 संस्कृति का अर्थ, स्वरूप–परिभाषा और तत्त्व
2 सभ्यता और संस्कृति तुलनात्मक अध्ययन
3 राजस्थानी लोक संस्कृति की विशेषताएं
4 राजस्थानी लोक परंपराए
5 राजस्थानी लोक सांस्कृतिक विशिष्टताएं और राजस्थानी समाज
6 राजस्थानी लोक धर्म–राजस्थानी लोक देवी–देवता
7 राजस्थानी लोक विश्वास, शकुन और मान्यताएं
8 राजस्थानी लोकतीर्थ, मेले, तीज त्यौहार, पर्व–उत्सव, राजस्थानी वेषभूषा, वस्त्राभूषण, लोक संगीत नृत्य और वाद्य

प्रथम इकाई – संस्कृति–अर्थ, परिभाषा, तत्त्व स्वरूप, सभ्यता और संस्कृति का तुलनात्मक अध्ययन।

द्वितीय इकाई – राजस्थानी लोक संस्कृति के तत्त्व और विशेषताएं

तृतीय इकाई – राजस्थानी लोक धर्म, लोक देवी–देवता परिचयात्मक प्रश्न

चतुर्थ इकाई – राजस्थानी लोक धर्म विश्वास और समाज परिचयात्मक प्रश्न

पंचम इकाई – राजस्थान के मेले, वस्त्राभूषण, तीज त्यौहार, लोक संगीत, लोक नृत्य और लोक वाद्य सामान्य परिचयात्मक प्रश्न

अभिप्रस्तावित ग्रंथ

1. राजस्थानी लोक साहित्य का सैद्वांन्तिक विवेचन : डॉ सोहनदान चारण, प्रकाशक राजस्थानी ग्रंथागार, जोधपुर
2. राजस्थान की सांस्कृतिक परंपरा : जयसिंह नीरज एवं भगवतीलाल शर्मा : राजस्थान साहित्य अकादमी, जयपुर।
3. राजस्थान के व्रत उत्सव : महेन्द्रसिंह नगर
4. राजस्थान के सांस्कृतिक लोकगीत : लक्ष्मीकुमारी चूण्डावत
5. राजस्थान के रीतिरिवाल : लक्ष्मीकुमारी चूण्डावत
6. राजस्थान के लोकवाद्य : रमेश बोराणा
7. राजस्थान के व्रत एवं त्यौहार : प्रीतिप्रभा गोयल

एम. ए. राजस्थानी

तृतीय सेमेस्टर

अनिवार्य पत्र (MAJOR COURSE)

RAJ 303 : राजस्थानी भारतीय एवं पाश्चात्य काव्य शास्त्र

पाठ्यक्रम उद्देश्य, उपादेयता एवं अध्ययन क्षेत्र

उद्देश्य एवं उपादेयता

उद्देश्य

किसी भी साहित्य के विशिष्ट अध्ययन के लिए साहित्य शास्त्र या व्यापक रूप में काव्य शास्त्र का अध्ययन आवश्यक है। काव्य शास्त्र के अध्ययन के अभाव में साहित्य के तत्त्व उसकी मूल प्रेरणा और प्रयोजन का अध्ययन नहीं किया जा सकता है। काव्य के सैद्धान्तिक पक्ष और उसके काव्यशास्त्रीय पक्ष का अध्ययन काव्य शास्त्र एवं साहित्य शास्त्र के सिद्धान्तों के अभाव में संभव नहीं है।

भारतीय काव्य शास्त्र के सिद्धान्तों के साथ–साथ पाश्चात्य काव्य शास्त्र के सिद्धान्तों का अध्ययन भी तुलनात्मक दृष्टि से आवश्यक है अतः इस प्रश्न पत्र में इन सिद्धान्तों को सम्मिलित किया गया है। राजस्थानी काव्य संरचना को समझने के लिए राजस्थानी काव्य शास्त्र के अन्तर्गत प्रमुख छंदों अलंकारों एवं काव्य कोषों का अध्ययन भी यिका जाना अपेक्षित है। अतः इस पक्ष को पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया गया है।

उपयोगिता

राजस्थानी भारतीय एवं पाश्चात्य काव्य शास्त्र के अध्ययन के अभाव में राजस्थानी काव्य परंपरा का काव्यशास्त्रीय अध्ययन संभव नहीं है। इस दृष्टि से यह पाठ्यक्रम विद्यार्थियों को काव्यशास्त्र की सूक्ष्मता को समझने में सहायता प्रदान करेगा।

अध्ययन क्षेत्र

1 साहित्य का स्वरूप तथा विवेचन भारतीय एवं पाश्चात्य दृष्टि : साहित्य के तत्त्व, काव्य की मूल प्रेरणा, और प्रयोजन

2 भारतीय एवं पाश्चात्य शास्त्रीय सिद्धान्त

3 भारतीय काव्य शास्त्र–रस सिद्धान्त, अलंकार संप्रदाय, ध्वनि सिद्धान्त

4 पाश्चात्य काव्यशास्त्र : अरस्तू, क्रोचे एवं आई.ए. रिर्चड्स

5 राजस्थानी काव्य शास्त्र प्रमुख छंद, अलंकार एवं काव्यदोष

प्रथम इकाई – साहित्य के तत्त्व, काव्य का प्रयोजन

द्वितीय इकाई – काव्य का स्वरूप : भारतीय एवं पाश्चात्य दृष्टिकोण : काव्य की मूल प्रेरणा

तृतीय इकाई – रससिद्धान्त : रस निष्पत्ति, साधारणीकरण अलंकार संप्रदाय, वक्रोक्ति सिद्धान्त (स्वरूप और भेद) ध्वनि सिद्धांत (ध्वनि का अर्थ और भेद)

चतुर्थ इकाई – पाश्चात्य काव्य : अरस्तू–अनुकृति सिद्धान्त, विरेचन सिद्धान्त, काव्य रूपों का विवेचन, क्रोंचे का अभिव्यंजनावाद, आई. ए. रिचर्डस का मूल्य सिद्धान्त

पंचम इकाई – राजस्थानी छंद : नीसाणी, दूहा, वैणसगाई अलंकार एवं काव्य दोष।

अभिप्रस्तावित ग्रंथ

1. रसमीमांसा : रामचन्द्र शुक्ल, भारतीय साहित्य शास्त्र, : बलदेव उपाध्याय,
2. भारतीय काव्य शास्त्र :कृष्णदेव, प्रकाशक :विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा
3. पाश्चात्य काव्यशास्त्र : देवेन्द्रनाथ शर्मा,
4. रघुवर जसप्रकाश : किशनाआढा : प्रकाशक : राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर
5. रघुनाथ रूपक : कवि मनसाराम : सं. महताब चन्द खारेड : प्रकाशक : साहित्य अकादमी नई दिल्ली

Inter disciplinary (Any One)

एम. ए. राजस्थानी

सेमेस्टर–तृतीय

ऐच्छिक पत्र (INTER DISCIPLINARY COURSE)

JVB 301 : Preksha Meditation and Self Management

क्रेडिट–4

उपलब्धियां (Course Outcome)

1. Students understand historical development of Preksha Meditation.
2. Students understand the components, spiritual-scientific basis, objectives and benefits of Preksha Meditation.
3. Students introduce the practical & process of Preksha Meditation.

. **Total Marks : 100 (70 Writen Exam+ 30 CIA)**

Unit-I Preksha Meditation - I

Preksha Meditation: nature, *upsampada*, main, supportive and specific components.

Kayotsarga (Relaxation with self awareness): objectives, spiritual and scientific basis and benefits.

Internal Trip (*Antaryatra*): objectives, spiritual and scientific basis and benefits.

Unit-IIPreksha Meditation – II

Perception of Breathing: objectives, spiritual and scientific basis, types and benefits.

Perception of Body: objectives, spiritual and scientific basis and benefits.

Unit-IIIPreksha Meditation - III

Perception of Psychic Centres: objectives, spiritual and scientific basis and benefits.

Psychic Colour Mediation (*LeshyaDhyan*): objectives, spiritual and scientific basis and benefits.

Contemplation (*Anupreksha*): objectives, spiritual and scientific basis and benefits.

Unit-IV Self Management through Preksha Meditation

Personality development and Preksha Meditation.

Health management and Preksha Meditation.

Stress Management and Preksha Meditation.

Memory and Preksha Meditation.

Time management and Preksha Meditation.

Emotional management and Preksha Meditation.

SUGGESTED READING

1 प्रेक्षापुष्प–आचार्यमहाप्रज्ञ, जैनविश्वभारतीप्रकाशन, लाडनूं, 2003।

2 अपनादर्पणअपनाबिम्ब– युवाचार्यमहाप्रज्ञ, जैनविश्वभारतीप्रकाशन, 1991।

3 प्रेक्षाध्यान : सिद्धातऔरप्रयोग–आचार्यमहाप्रज्ञ, जैनविश्वभारतीप्रकाशन, लाडनूं।

4 प्रेक्षाध्यान : व्यक्तिवविकास–मुनि धर्मेश, जैनविश्वभारतीप्रकाशन, लाडनूं।

5 जीवन विज्ञान की रूपरेखा–मुनि धर्मेश, जैनविश्वभारतीप्रकाशन, लाडनूं, 1996।

6 जीवन विज्ञान, प्रेक्षाध्यान एवं योग–संपा. समणी डॉ. मल्लीप्रज्ञा, जैनविश्वभारतीविश्वविद्यालय, 2009।

7 Mirror of the Self – AcharyaMahaprajna, Jain VishvaBharatiPrakashan, Ladnun (Rajasthan), 1995.

8 PrekshaDhyana – Theory & Practice, AcharyaMahaprajna, Jain VishvaBharatiPrakashan, Ladnun (Rajasthan), 1994.

एम. ए. राजस्थानी

सेमेस्टर–तृतीय

ऐच्छिक पत्र (INTER DISCIPLINARY COURSE)

JVB 302 : Introduction of Sanskrit

क्रेडिट–4

उपलब्धियां (Course Outcome)

1. संस्कृत साहित्य के विभिन्न विधाओं का ज्ञान होगा।
2. संस्कृत साहित्य के प्रमुख रचनाकारों का परिचय प्राप्त होगा।
3. संस्कृतव्याकरण की मूल-अवधारणाओं (जैसे कि वर्णमाला, संज्ञा, सन्धि, समास आदि को) समझने में सक्षम होंगे।
4. अनुवाद और लेखनकौशल में अभिवृद्धि होगी।

पूर्णांक 100 (70 लिखित परीक्षा + 30 CIA)

इकाई१-

- संस्कृतवर्णमालापरिचय
  १. स्वरवर्ण
  २. व्यञ्जनवर्ण
- शब्दरूप(संज्ञात्मक)

शब्द	अकारान्त	आकारान्त	इकारान्त	ईकारान्त	उकारान्त	ऋकारान्त
पुलिङ्ग	राम, बालक	-	कवि, हरि, पति	-	गुरु	पितृ, दातृ
स्त्रीलिङ्ग	-	लता	मति	नदी	धेनु	मातृ
नपुंसकलिङ्ग	फल	-	वारि	-	वस्तु	-

शब्दरूप(व्यञ्जनान्त\हलन्त)

पुलिङ्ग	राजन्, आत्मन्, महत्, गच्छत्, ब्रह्मन्, विद्वस्
स्त्रीलिङ्ग	वाच्, सरित्, दिश्, परिषद्
नपुंसकलिङ्ग	जगत्, नामन्, मनस्, पयस्, कर्मन्

- सर्वनाम- अस्मद्, युष्मद्, तद्, यद्, एतद्, अदस्, भवत्, किम्, सर्व (तीनों लिङ्गों मे)।
- धातुरूप
  १. परस्मैपदीधातु- पठ्, भू, लिख्, अस्, गम्, खाद्, वद्, हस्, कृ, पा, दा, नी, ज्ञा।
  २. आत्मनेपदीधातु- लभ्, सेव्, भाष्, वन्द्, मुद्, क्षम्, रम्, कम्प्।

इकाई२-

- सन्धि
  १.स्वरसन्धि
  २. व्यञ्जनसन्धि

३. विसर्गसन्धि

- समास

  १. अव्ययीभावसमास

  २. तत्पुरुषसमास

  ३. कर्मधारायसमास

  ४. द्विगुसमास

  ५. बहुव्रीहिसमास

  ६. द्वन्द्वसमास

इकाई ३-

- कारक
  १.कर्ता, २.कर्म, ३.करण, ४.सम्प्रदान, ५.अपादान, ६.सम्बन्ध, ७. अधिकरण
- वाच्य
  १.कर्तृवाच्य, २. कर्मवाच्य, ३. भाववाच्य
- प्रत्यय
  १. कृदन्त- क्त, क्तवतु, क्त्वा, ल्यप्, तुमुन्, क्तिन्, ल्युट्, तव्य/तव्यत्, अनीयर्।
  २. तद्धित- मतुप्, वतुप्, अण्, घञ्, इन्, ठक्, तल्, ष्यञ्।
  ३. स्त्रीप्रत्यय- टाप्, ङीप्, ङीष्।
- अव्यय
  १.स्थानवाची- अत्र, तत्र, यत्र, सर्वत्र, अन्यत्र, कुत्र, यतः, ततः।
  २.समयवाची- यदा, तदा, कदा, सर्वदा, अद्य, ह्यः, श्वः, परश्वः।
  ३.समुच्चयवाची- च, अपि, एव
  ४. दिशावाची- अभितः, परितः, पुरतः, वामतः, दक्षिणतः।
  ५. निषेधवाची- मास्तु, अलम्, न।
  ६.सादृश्यवाची- इव, नु, वा, चित्।
- उपसर्ग- आ, उत्, अनु, प्र, प्रति, अव, उप, सम, अप।
- विशेष्य-विशेषणसम्बन्ध
- संस्कृत अनुवाद(हिन्दी से संस्कृत में)

इकाई(संस्कृतसाहित्य का आलोचनात्मक इतिहास) ४-

1. संस्कृतमहित्य का उद्भव और विकास
2. संस्कृत साहित्य के विभिन्न विधाओं का अध्ययन

   १. गद्यकाव्य

   २. पद्यकाव्य

   ३. चम्पूकाव्य

   ४. नाटक

3. संस्कृत साहित्य के प्रमुख रचनाकारों का परिचय

१. कालिदास
२. भारवी
३. श्रीहर्ष
४. भवभूति
५. भास
६. शूद्रक
७. बाणभट्ट

सहायक ग्रन्थसूची :

१. रचनानुवादकौमुदी, कपिलदेव द्विवेदी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, २०२४.

२. बृहत् अनुवाद-चन्द्रिका, चक्रधर नौटीयाल "हंस" शास्त्री, मोतीलाल वनारसीदास, वाराणसी,१९६२.

३. सुगम संस्कृत व्याकरण, राकेश शास्त्री-प्रतिमा शास्त्री, पंचशील प्रकाशन, जयपुर, १९९७.

४. व्याकरणसौरमम्, कमल कमलाकान्त मिश्र, एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली, २००२.

५. संस्कृत साहित्य का इतिहास, उमाशङ्कर शर्मा(ऋषि), चौखम्बा भारती अकादमी, वाराणसी, २०१७.

६. संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास, डा. कपिलदेव द्विवेदी, उत्तरप्रदेश संस्कृत अकादमी, लखनऊ, १९९३.

एम. ए. राजस्थानी
एम.ए. सेमेस्टर–तृतीय
ऐच्छिक पत्र (INTER DISCIPLINARY COURSE)
JVB 303 : Introduction to Prakrit
क्रेडिट–4

उपलब्धियां (Course Outcome)

1. समणसुत्तं में वर्णित नीतिपरक सिद्धान्तों का ज्ञान हुआ।
2. उत्तराध्ययन सूत्र में वर्णित विनय का स्वरूप का ज्ञान।
3. प्राकृत भाषा का समान्य परिचय हुआ।
4. प्राकृत साहित्य की समान्य जानकारी हुई।

पूर्णांक : 100 (70 लिखित परीक्षा + 30 CIA)

इकाई–प्रथम : समणसुत्तं – प्रथम 1–25 गाथा

इकाई– द्वितीय : उत्तरायतन सूत्र – अध्ययन 1 (गाथा 01–25)

इकाई–तृतीय : प्राकृत भाषा का सामान्य परिचय एवं अनुवाद रचना

प्राकृत की उत्पत्ति एवं विकास, प्रमुख प्राकृतों का समान्य परिचय, भेद एवं उनकी सामान्य विशेषताएँ (मागधी, अर्द्धमागधी, शौरसेनी, महाराष्ट्री एवं अपभ्रंश)

प्राकृत स्वयं शिक्षक के प्रथम 25 पाठों के आधार पर अभ्यास एवं अनुवाद रचना

इकाई–चतुर्थ : प्राकृत साहित्य का इतिहास

श्वेताम्बर एवं दिगम्बर आगम साहित्य, प्राकृत काव्य (महाकाव्य, खण्डकाव्य, ऐतिहासिक काव्य) कथा एवं चरित साहित्य, प्राकृत गद्य एवं चम्पू साहित्य, प्राकृत सट्टक एवं प्राकृत व्याकरण साहित्य।

संदर्भग्रंथ :

1. उत्तरज्झयणाणि–हिन्दी अनुवाद एवं व्याख्या सहित, संपादक–आचार्यश्री महाप्रज्ञ, जैन विश्व भारती, लाडनूं
2. प्राकृत भाषा एवं साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास, नेमिचन्द शास्त्री, तारा प्रकाशन, वाराणसी
3. प्राकृत साहित्य का इतिहास, डॉ. जगदीशचन्द्र जैन, चौखम्बा प्रकाशन, वाराणसी

4- Introduction to Prakrit, A.C. Woolner

5- History of Prakrit Literature, Hardev Bahari

6- समणसुत्तं – सम्पपदक आचार्य विनोबा भावे, दिल्ली

7- प्राकृत स्वयं शिक्षक – प्रो. प्रेम सुमन जैन, प्राकृत भारती अकादमी, जयपुर

एम. ए. राजस्थानी

सेमेस्टर–तृतीय

ऐच्छिक पत्र **(INTER DISCIPLINARY COURSE)**

JVB 304 : The Uses of English

क्रेडिट–4

उपलब्धियां (Course Outcome)

1- Students learned Basic Sentence Patterns and Transformation
2- Students learned Time, Tense and Concord
3- Students learned Voice, Narration and Modal Auxiliaries
4. Students learned Writing Skills. (Letter, Application, Précis, Report and Essay Writing.)

Total Marks : 100 (70 Writen Exam+ 30 CIA)

Unit I: Basic Sentence Patterns and Transformation.

Unit II: Time, Tense and Concord.

Unit III: Voice, Narration and Modal Auxiliaries.

Unit IV: Writing Skills. (Letter, Application, Précis, Report and Essay Writing.)

SUGGESTED READING

- Green, David. ***Contemporary English Grammar Structure and Composition***.Laxmi Publications; Second edition (2015)
- Hornby, A.S.***A guide to Patterns and Uses.*** Oxford University Press, New Delhi.
- Swan, Michael***. Practical English Grammar.***Oxford University Press, New Delhi.
- Harit, S.K.***Communication Skills and English Grammar.***Associated Book Company, Jodhpur.
- Krishnaswamy, N.***Modern English: A Book of Grammar, Usage and Composition.*** Laxmi Publications.

एम. ए. राजस्थानी
सेमेस्टर–तृतीय
ऐच्छिक पत्र (INTER DISCIPLINARY COURSE)
JVB 305 : Non-violence and Peace
क्रेडिट–4
उपलब्धियां (Course Outcome)

1- Students learned about Violence: Concept, types, impact
2- Students learned aboutConflict – Cause, Forms, Impact
3- Students learned about Human Nature Relationship
4- Students learned about World Peace

Total Marks : 100 (70 Writen Exam+ 30 CIA)

Unit- I	**Violence: Concept, types, impact** Non-violence- Philosophical and Historical Interpretation, Applied aspect, Training in Non-violence
Unit-II	**Conflict – Cause, Forms, Impact** Conflict Resolution-Diplomatic, Gandhian and Anekantik Techniques.
Unit-III	**Human Nature Relationship** EnvironmentalProblems. Ethical Aspects.
Unit – IV	**World Peace** Threat to Global Peace Initiative For Peace Making

SUGGESTED READING

- विश्वशांति एवंअहिंसाप्रशिक्षण–प्रो. बच्छराजदूगड़,
- गांधीदर्शन, शांति एवंमानवाधिकार, डॉ. अनिलधर, जैनविश्वभारतीसंस्थान, लाडनूँ
- पर्यावरण अध्ययन, डॉ. सतिन्द्र सिंह
- Anekant the Third Eye, AcharyaMahapragya.
- Towards a Nonviolent Future, S.L. Gandhi(Ed.), Anuvibha, Jaipur, 2015
- Peace Studies, The Discipline and Dimensions AshuPasricha, 2003

एम. ए. राजस्थानी

सेमेस्टर–तृतीय

ऐच्छिक पत्र (INTER DISCIPLINARY COURSE)

JVB 306 Introduction of Political Science

क्रेडिट–4

Outcomes:-

1. Devlop Knowledge about meaning and nature of Political Theories.
2. Students Understand Various Approaches of Political Theory.
3. Students Understand About Various Types of Government.
4. Students Understand Contemporary various dimensions of Political Theory.
5. Students Understand About Various Concept of Political Theory.

Total Marks : 100 (70 Writen Exam+ 30 CIA)

Unit-1 Concept of Political Theory, Rights and its various types, Concept of Power-sources, types and Characteristics, Concept of Authority-sources, types and Characteristic, Concept of Legitimacy, sources, and Characteristic

Unit-2 Concept of Citizenship & Indian Citizenship, Concept of Liberty, Equality and Justice.

Unit-3 Political Modernization, Political Development, Political Decay, Political Culture, Democracy & Dictatorship

Unit-4 Concept of State, Politics, Parties, Coalition Government, Politics of Reservation.

Reference Books:

1. Modern Political Theory: S.P Verma
2. Contemporary Political Theory: J.C Johari
3. Aadhunik Rajnitik Sidhhant: S.L Verma
4. Rajniti Shastra ke Mul Sidhhant: B.R Purohit
5. Rajniti Vigyan ke Mul Aadhar: B.L Fadia
6. Rajniti Vigyan ke Mul Aadhar: Pukhraj Jain

एम. ए. राजस्थानी

सेमेस्टर–तृतीय

ऐच्छिक पत्र (INTER DISCIPLINARY COURSE)

JVB 307 : Introduction to Jainism

क्रेडिट–4

उपलब्धियां (Course Outcome)

1- Students learned about Jain History
2- Students learned about Jain Metaphysics
3- Students learned about Jain Principal
4. Students learned about Jain Ethics & Yoga

Total Marks : 100 (70 Writen Exam+ 30 CIA)

Unit I: Jain History

1. Antiquity of Jainism (*Riabha and Mahavira*)
2. Jain religious Schools, Orders, and Sects
3. Jain Festival
4. Jain Literature

Unit II: Jain Metaphysics

1. Concept of Reality
2. Cosmology: Jain Perspective
3. The Nine Truths of Classical Jainism
4. Salvation and way of it

Unit III: Jain Principal

1. Anekantvada
2. Syadvada
3. Karmavada

Unit IV: Jain Ethics & Yoga

1. Jain Life Style : Based on Ahimsa on Aparigraha
2. Jain view of Environment
3. Jain Yoga

SUGGESTED READING

- AcharyaMahaprajna, ***Jain DarshanMananAurMimansa***, AdarshSahityaSangh, Churu, 1977, (p. 1-84)
- Shastri, Kailashchandra, ***Jain Dharm***, BharatvarshiyaDigamber Jain Sangh, Mathura, UP, 1985. (Chap. – 1, 4, 5, 6 and the part of Chap. 7 – p. 337 – 365)
- Jain, Jyoti Prasad, **Religion and Culture of the Jains**, BharatiyaGyanpeeth, 1999 (Chap. – 1 to 3 and 7 to 9)
- Bhaskar, Bhagchand Jain, ***Jain Dharma kaMaulikItihas*** SamyakgyanPracharakMandal, Jaipur. Vol 1 & 2.
- ShastriNemichandra, ***TirthankaraMahaveer aura UnkiAcharyaParampara***, Vol.-I., PrachyaShramanaBharati, Mujaffar Nagar, U.P.
- SamaniRijuPrajna, ***Jain ItihasaurSanskriti***,Jain VishvaBharati Institute, Ladnun
- SamaniRijuPrajna, ***Jain Tattvamimansa aura AcharaMimansa***, Jain VishvaBharati Institute, Ladnun.

एम. ए. राजस्थानी
सेमेस्टर–तृतीय
अनिवार्य पत्र (CORE COURSE)
JVB 308 : शोध–प्रविधि
क्रेडिट–4
उपलब्धियां (Course Outcome)

1- शोध का परिचय एवं प्रकार का परिचय प्राप्त हुआ
2- शोध–समस्या, परिकल्पना एवं शोध–क्षेत्र का परिचय प्राप्त हुआ
3- शोध–विधियों की जानकारी प्राप्त हुई
4- पाद–टिप्पण, संदर्भ ग्रन्थ सूची एवं परिशिष्ट निर्माण की विधि का ज्ञान हुआ

पूर्णांक : 100 (70 लिखित परीक्षा + 30 CIA)

इकाई–1:

शोध : स्वरूप–परिचय, (Introduction : Research),

वर्णनात्मक शोध (Descriptive Research),

शोध के प्रकार (Types of Research),

ऐतिहासिक, तुलनात्मक, भाषात्मक, सामाजिक, प्रविधिपरक एवं कार्यपरक शोध (Historical, Comperative, Linguistic, Social, Methodological and Action Research).

इकाई–2:

शोध–समस्या का चयन (Selection of Research Problem),

परिकल्पना (Hypothesis),

शोध–क्षेत्र (Area of Research),

शोध रूपरेखा (Synopsis)

इकाई–3:

शोधविधियां (Methods of Research), वैज्ञानिक विधि (Scientific Method)

निरीक्षणात्मक विधि (Observation Method), साक्षात्कार विधि (Interview Method)

प्रश्नपरक विधि (Questionnaire Method)

इकाई–4:

वैयक्तिक व एकल अध्ययन (Case Study), प्रतिदर्श–प्रतिचयन (Sampling),
सामग्री या आंकड़ों का संग्रहण व निरीक्षण (Collection & Analysis of Data etc.),
पादटिप्पण (Foot Notes), डाइक्रिटिकल मार्क (Diacritical Marks),
उपसंहार (Conclusion), सन्दर्भ ग्रन्थ सूची (Bibliography), परिशिष्ट निर्माण (Appendix),

संदर्भ ग्रंथ–

1- Methods in Social Research, William Goode, Paul K. Hatt, McGraw Hill Book Company, 1974.
2. अनुसंधान विधियां (व्यवहारक विज्ञानों में), डॉ. एच.के कपिल, एच.पी. भार्गव बुक हाउस, आगरा, 2015।
3. अनुसंधान विधियां, डॉ. डी.एन. श्रीवास्तव, साहित्य प्रकाशन, आगरा, 2010
4- Research Methodology, Gopal Lal Jain, Mangal Deep Publication, Jaipur, 2003.
5. Scientific Social Sureys and Research, Pauline V. Young, Prentice Hall of India Private Limited, New Delhi, 1939.

एम. ए. राजस्थानी

चतुर्थ सेमेस्टर

अनिवार्य पत्र (MAJOR COURSE)

RAJ 401 : राजस्थानी रासो काव्य परंपरा

पाठ्यक्रम उद्देश्य, उपादेयता एवं अध्ययन क्षेत्र

उद्देश्य एवं उपादेयता

उद्देश्य

राजस्थानी काव्य परंपरा की एक विशिष्ट धारा रासो काव्यों की रही है। 'रासो' संज्ञक रचनाएं राजस्थानी साहित्य काव्य प्रारंभिक रचनाओं में से रही है। जिसमें 'भरतेश्वर बाहुबलिरास' प्रमुख है। रासो काव्य विविध विषयक रहे हैं जिनमें वीरता, शृंगार भक्ति प्रधान प्रमुख कहे जा सकते हैं। 'पृथ्वीराज रासो' राजस्थानी साहित्य की ही नहीं अपितु सम्पूर्ण भारतीय साहित्य परंपरा की एक विशिष्ट रचना कही जा सकती है। राजस्थानी जैन काव्य परंपरा में भी 'रासो' संज्ञक रचनाओं का बाहुल्य रहा है।

'रासक', रास, 'रासौ', 'रासऊ' आदि विभिन्न नामों से इस क्रम की रचनाएं जुड़ी रही हैं। प्राचीन और मध्यकालीन राजस्थानी काव्य परंपरा का यह लोकप्रिय काव्य है। रासो काव्य परंपरा का अध्ययन इस प्रश्न पत्र का उद्देश्य है जिसमें शृंगार और भक्ति परक रचनाओं का विशिष्ट अध्ययन भी किया जाएगा।

उपयोगिता

आधुनिक काल में परिवर्तित प्रवृत्तियों के कारण राजस्थानी काव्य में भी भाव, भाषा और शैली के स्तर पर निरतंर परिवर्तन आ रहा है। ऐसी परिस्थितियों में प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य रूपों और उससे जुड़ी रचनाओं का अध्ययन आवश्यक है। इस दृष्टि से इस पाठ्यक्रम का संयोजन किया गया है। जो प्राचीन एवं मध्यकालीन राजस्थानी काव्य परंपरा के इस विशिष्ट विविध काव्य रूप अध्ययन में उपयोगी सिद्ध होगा।

अध्ययन क्षेत्र

1 रासो शब्द का अर्थ परिचय

2 रासो काव्य परंपरा का अध्ययन–रासो काव्यों का प्रारंभ एवं विविध स्वरूप

3 राजस्थानी रासो काव्यों के काव्य विषय : वीरता प्रधान, श्रृंगार प्रधान, भक्ति प्रधान

4 राजस्थानी जैन काव्यों की रासौ संज्ञक रचनाओं का परिचय।

प्रथम इकाई –रासो शब्द का अर्थ एवं राजस्थानी काव्य परंपरा–प्रमुख रचनाएं और रचनाकार

द्वितीय इकाई – राजस्थानी जैन काव्य परंपरा की रासो रचनाओं का परिचयात्मक अध्ययन

तृतीय इकाई – बीसलदेव रासो : नरपति नाल्ह से संबंधित आलोचनात्मक प्रश्न

चतुर्थ इकाई – राम रासो : माधवदास दधवाडिया से संबंधित आलोचनात्मक प्रश्न (प्रारंम्भिक 50 छंद)

पंचम इकाई – दोनों पाठ्यपुस्तकों से सप्रसंग व्याख्या

पाठ्यपुस्तकें

1 बीसलदेव रासो : नरपति नाल्ह : प्रंबध पारिजात : सं. रावत सारस्वत, प्रकाशकः राजस्थानी ग्रंथागार, जोधपुर

2 रामरासो : माधवदास दधवाड़िया : (सं.) शुभकरण देवल, प्रकाशक : साहित्य अकादमी, नयी दिल्ली

अभिप्रस्तावित ग्रंथ

1. प्राचीन काव्यों की रूप परंपरा : अगरचन्द नाहटा, राजस्थानी, ग्रंथागार, जोधपुर
2. पृथ्वीराज रासो की भाषा : डॉ. मोतीलाल मेनारिया : साहित्य संस्थान, जोधपुर
3. राजस्थानी भाषा और साहित्य : डॉ मोतीलाल मेनारिया, राजस्थानी ग्रंथागार, जोधपुर
4. राजस्थानी भाषा और साहित्य का इतिहास : सीताराम लालस, राजस्थानी ग्रंथागार, जोधपुर
5. राजस्थानी जैन साहित्य : डॉ. नरेन्द्र भानावत, मूलचन्द सेठिया
6. राजस्थानी जैन साहित्य : डॉ. मनमोहन स्वरूप माथुर, राजस्थानी ग्रंथागार, जोधपुर

Research

Core Elective (Any One)

एम.ए. राजस्थानी

सेमेस्टर–चतुर्थ

ऐच्छिक पत्र (ELECTIVE COURSE)

JVB 401 : Review of Literature

क्रेडिट–4

उपलब्धियां (Course Outcome)

1. Decipher the concept, source and types of literature.
2. Development of research writing skills.
3. Understand the concept of seminar and workshop.
4. Development of understanding method of reviewing literature.

Total Marks 100 (Departmental Presentation 50 Marks + CIA 15 Marks +Theory 35 Marks)

Theory (2 Credits)

UNIT-I Review of Literature

a) Meaning, Nature of Literature Review
b) Significance of Literature Review
c) Principles of Literature Review
d) Identification of Research gaps through Literature Review

UNIT II Sources of Literature

Sources of Literature:

a) Primary
b) Secondary
c) Tertiary

Practical (2 Credits)

Collection of Review of Literature on concerned subject (minimum 15 including books, journals, digital sources and encyclopedias)

Work Cited :

Ferguson, G.A. (1971), Statistical Analysis in Psychology and Education, Kogakusna, Tokyo : McGraw-Hill.

Garrett, H.E. (1971), Statistical in Psychology and Education, New Delhi: Paragon International Publisher.

Guilford, J.P. &Fruchter, B. (1981), Fundamental Statistical in Psychology and Education, New York: McGraw-Hill.

Mangal, S.K. (2008), Statistical in Psychology and Education, New Delhi: Prentice Hall of India Private Limited.

McCall, R. (1993), Fundamental Statistics for the Behavioural Science. New York: Harcourt Brace.

Ravid, Ruth. (2000), Practical Statistics for Education. New York: University Press of America

Seigel, S. & Castel Ian N.J. (1988), Non-parametric statistics for the Behavioural Science. Singapore: Graw-Hill Book Co.

एम.ए. राजस्थानी
सेमेस्टर–चतुर्थ
ऐच्छिक पत्र (ELECTIVE COURSE)
JVB 402 : Formulation of Research Proposal
क्रेडिट–4

उपलब्धियां (Course Outcome)

1- Develop the research design
2- Understand various research steps
3- Explain the various research methods and techniques

Total Marks 100 (Proposal Formulation 50 Marks + CIA+ Theory 15+35=50)

Theory (2 Credits)

UNIT-1: Research Design Quantitative-I

a) Selection of research problem
b) Review of related literature
c) Objectives of research
d) Formation of hypothesis

UNIT-2: Research Design Quantitative-II

a) Procedure of Data collection, classification and tabulation
b) Variables
c) References - Footnote, Bibliograpy

Work Cited:

Anderson, R.I., and T.A. Banerot (1952), Statistical Theory of Research, New York, McGraw Hill Book Company.

Ferguson, G.A. (1971), Statistical Analysis in Psychology and Education, Kogakusna, Tokyo : McGraw-Hill.

Garrett, H.E. (1966), Statistical in Psychology and Education, VokelsFeffers and Simons Ltd., Bombay

Garrett, H.E. (1971), Statistical in Psychology and Education, New Delhi: Paragon International Publisher.

Guilford, J.P. &Fruchter, B. (1981), Fundamental Statistical in Psychology and Education, New York: McGraw-Hill.

Kerlinger, Fredan N. (1964), Foundations of Behavioral Research, Holt Rinhert and Winston, New Yourk

Mangal, S.K. (2008), Statistical in Psychology and Education, New Delhi: Prentice Hall of India Private Limited.

McCall, R. (1993), Fundamental Statistics for the Behavioural Science. New York: Harcourt Brace.

Ravid, Ruth. (2000), Practical Statistics for Education. New York: University Press of America

Seigel, S. & Castel Ian N.J. (1988), Non-parametric statistics for the Behavioural Science. Singapore: Graw-Hill Book Co.

Sharma, R.A. (1993), Fundamental of Educational Research, International Publishing House, Meerut,

गुप्ता एस.पी. (2011), अनुसंधानसंदर्शिका, सम्प्रत्यय, कार्यविधि एवंप्रविधि, शारदापुस्तकभवन, इलाहाबाद।

यादव, राकेशचन्द (2009), राजर्षिपुरूषोत्तमदासदण्डन के शैक्षिकविचार, प्रथमसंस्करण, उत्तरप्रदेशराजर्षिटण्डनमुक्तविश्वविद्यालय, इलाहाबाद।

कौल, लौकेश, (2009), शैक्षिकअनुसंधान की कार्यप्रणाली, तृतीय पुर्नमुद्रण, विकासपब्लिशिंगहाउसप्रा. लि., नईदिल्ली।

गुप्ता एस.पी. एवंअलकागुप्ता (2008), व्यवहारपरकविज्ञानोंमेंसांख्यिकी विधियां, चतुर्थसंस्करण, शारदापुस्तकभवन, इलाहाबाद।

पाण्डेय, के.पी. (2008), शैक्षिकअनुसंधान, तृतीय संस्करण, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।

राय, पासरनाथ (2007), अनुसंधानपरिचय, द्वादशमसंस्करण, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, आगरा।

गैरिट, हेनरीई. (1989), शिक्षाऔरमनोविज्ञानमेंसांख्यिकीय, ग्यारहवांहिन्दीसंस्करण, कल्याणीपब्लिशर्स, लुधियाना।

सिन्हा, एच. सी. (1979), शैक्षिकअनुसंधान, विकासपब्लिशिंगहाउसप्रा. लि., नईदिल्ली।

Research

Core Elective (Any One)

एम.ए. राजस्थानी

सेमेस्टर–चतुर्थ

ऐच्छिक पत्र **(ELECTIVE COURSE)**

JVB 403 : Publication of Article in Refereed Journal

क्रेडिट–4

उपलब्धियां (Course Outcome)

1- Develop the research Knowledge
2- Understand Subjects Knowledge
3- Develop writing Skill

- Total Marks 100 (Publication of Paper 70 + CIA 30)

In this paper there is no theory examination. In this paper following action should be taken.

- Two research articles should be published in two different ISSN based research magazine.

अथवा

एम.ए. राजस्थानी

सेमेस्टर–चतुर्थ

ऐच्छिक पत्र **(ELECTIVE COURSE)**

JVB 404 : Paper Presentation in National/International Seminar/Conference

क्रेडिट–4

उपलब्धियां (Course Outcome)

1- Deeper understanding of the Subject Matter
2- Increased Confidence Level
3- Enhance Communication skills
4- Improved Research and Analytical Skills

Total Marks 100 (Paper Presentation 70 + CIA 30)

In this paper there is no theory examination. In this paper following action should be taken.

- Participation and presentation of two papers in national level seminars/conferences.

Research

(Core Compulsory)

एम.ए. राजस्थानी

सेमेस्टर–चतुर्थ

अनिवार्य पत्र (MAJOR COURSE)

JVB 405 : Dissertation

क्रेडिट–4 (Dissertation Writing)

उपलब्धियां (Course Outcome)

2. विद्यार्थी शोध विधियों से परिचित हुआ।
3. विषय का गम्भीर ज्ञान प्राप्त हुआ।
4. लघुशोध प्रबन्ध के माध्यम से नये तथ्यों को उजागर किया गया।
5. भविष्य में की जाने वाली शोध का पृष्ठभूमि तैयार हुई।

Total Marks 100 (Preparation of Dissertation – 70 + CIA 30)

एम.ए. राजस्थानी

सेमेस्टर–चतुर्थ

अनिवार्य पत्र (MAJOR COURSE)

JVB 406 : Presentation and Viva-voce

क्रेडिट–4

उपलब्धियां (Course Outcome)

1. विद्यार्थी का आत्मविश्वास बढता है।
2. विद्यार्थी प्रस्तुति में सक्षम होता हैं।
3. विषय विशेषज्ञ के सामने जवाब देने की योग्यता प्राप्त होती है।
4. भविष्य में की जाने वाली शोध का पृष्ठभूमि तैयार हुई।

Total Marks 100 (Presentation 30 Viva Voice – 40 + CIA 30)